International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 271-274

रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

डॉ. प्रमिला सिंह

प्राचार्य, एम.एल. चौरसिया शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। पर्यावरणीय जागरुकता शिक्षा को प्रभावशाली बनाने हेतु पर्यावरणीय जागरुकता संबंधी आंकड़ों का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतवर्ष एवं विश्व के संदर्भ मे पर्यावरण से संबंधित आंकड़े उपलब्ध है, जिससे पर्यावरण शिक्षा मे पर्यावरण प्रदूषण की गंभीर स्थिति और उससे उत्पन्न समस्याओं की भयावह स्थिति का ज्ञान एवं अववोध विकसित करने मे सहायता मिलती है। वर्तमान समय में पाठ्य सहगामी क्रिया का पाठ्यक्रम के साथ में होना छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तो अधिक होती है साथ ही ये क्रियाएं विद्यार्थियों में अनेक नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चरित्रिक गुणों का विकास करती है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

शब्द कुन्जी : रीवा विकासखण्ड, हाई स्कूल स्तर, पर्यावरणीय जागरुकता, पाठ्य सहगामी, सकारात्मक प्रभाव

1. प्रस्तावना

पर्यावरण से सम्बन्धित अनेकों प्रसंग तथा व्याख्यायें हमारे वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में भरे पड़े हैं। प्राचीन ऋषि–मुनियों की पूरी दिनचर्या ही प्रकृति पर निर्भर थी। जहाँ अरण्यों में उपलब्ध सामग्रियों से ही उनके निवास–गृह कुटिया का निर्माण होता था, वहीं वनीय फल–फूलों पर उनका जीवन आधारित था। नदियों में स्नान होते थे तथा उन्हीं झुरमुटों के मध्य एकान्त स्थल पर वृक्षों के नीचे पूजा–पाठ तथा यज्ञादि क्रिया–कलाप होते थे। इन्हीं सघन वनों के गुरूकुल आश्रमों में शिष्य विद्या ग्रहण करते थे। इसी प्रसंग का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान राम के विषय में लिखा है कि – ''गुरू गृह पढ़न गये रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई।'' राजगृहों से राजपुत्रों को ब्रह्मचर्य व्रत के पालन तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए इन्हीं अरण्य स्थित गुरूकुल आश्रम (पाठशालाओं) रूपी में भेज दिया जाता था। राजकुमार वेदों, पुराणों तथा धनुर्विद्या इत्यादि ज्ञान से सम्पन्न होकर इनसे निकलते थे। गुरूकुल आश्रम स्थित जीव–जन्तुओं, पेड़, फल–फूलों तथा गुरू के यज्ञादि कार्यों सम्बन्धी सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते थे तथा एक योग्य ब्रह्मचर्य व्रतधारी को सम्पूर्ण ज्ञान से मंडित था, परिपूर्ण करके उन्हें गृहस्थ आश्रम के योग्य बनाकर ही अपने दायित्वों से मुक्त होते थे। प्राचीन काल में पर्यावरण में किसी भी प्रकार का असन्तुलन नहीं था क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरणीय तत्वों को देवता मानकर उनकी पूजा करता था हानि पहुँचाने को कौन कहे? प्रत्येक का तन–मन तथा धन से रक्षा करना नैतिक तथा धार्मिक कर्तव्य था। जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी, आकाश एवं विभिन्न वनीय वृक्षों को देव तुल्य स्थान प्राप्त था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन तत्वों को विशेष स्थान देते हुए लिखा है कि – ''क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा'' ये ऐसे पाँच तत्व हैं जिससे सृष्टि का निर्माण होता है। इससे ही पर्यावरण विज्ञानियों ने बाद में 'पारिस्थितिकी' नाम दिया। डच मूल के भारतीय विद्वान फादर कामिल बुल्के ने अपने शोध–ग्रन्थ 'रामकथा उद्भव और विकास' में कहा है कि ''बाल्मीकि रामायण तो जैसे पर्यावरण की महागाथा ही है।''

शिक्षा समाज में, समाज के द्वारा समाज के लिए दी जाती है। शिक्षक और समाज का घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का सार्थक एवं सशक्त साधन है। शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा ही नए युवकों में ऐसे गुणों का विकास किया जा सकता है, जो स्वस्थ समाज के लिए वांछनीय है। बालक के सर्वांगीण विकास हेतु निम्न पक्षों के विकास आवश्यक है– शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावात्मक विकास। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय के विषयों के शिक्षण में छात्रों के ज्ञानात्मक पक्ष का विकास अधिक होता है, लेकिन भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों का विकास नहीं हो पाता इसलिए इन पक्षों के विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सहारा लिया जाता है। विद्यालयों में आज हम इन क्रियाओं को शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार करते हैं। पाठ्यक्रम का आज जब विकसित अर्थ लिया जाता है तो समुचित विकास के लिए इन सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में उचित स्थान देना आवश्यक है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ छात्रों को अच्छा नागरिक बनने का प्रशिक्षणदेती हैं। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को विद्यालय में व्यस्त रखती है। पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षण में श्रेष्ठ स्थान रखती है और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पूरा–पूरा योगदान देती है। इनमें शामिल होकर छात्र अपने गुणों की क्षमता से आगे निकलकर विकास करता है। उनमें आत्मनिर्भरता आती है, वे किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए सक्षम बनते है।

2. पाठ्य सहगामी क्रियाएँ की उपयोगिता –

- इनसे छात्रों में नागरिक के गुणों के विकास हेतु अवसर प्रदान किया जाता है।
- छात्रों में नेतृत्व के गुणों का विकास होता है।
- छात्रों को नवीन प्रकार की अरुचियों के विकास के लिए अवसर मिलते है।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत छात्रों में समाजीकरण होता है।

- इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।

3. शब्दों का स्पष्टीकरण

रीवा विकासखण्ड : रीवा जिले के अन्तर्गत आने वाले 9 विकासखण्डों में से एक विकासखण्ड है।

हाई स्कूल स्तर : प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत हाई स्कूल स्तर से अभिप्राय म.प्र. शासन द्वारा मान्यता प्राप्त शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय।

पर्यावरणीय : शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्द पर्यावरणीय से शोधार्थी का आषय, पर्यावरण की वैज्ञानिक अवधारणा से ही है अर्थात् पर्यावरणीय शब्द का आषय हमारे चारो ओर के वातावरण और उसके प्रमुख घटको से है।

जागरूकता : जागरूकता से तात्पर्य तथ्य के घटक तत्वों की जानकारी उसके विघटन/ असंतुलन, उनके कारणों एवं उसके बचाव से सम्बन्धी जानकारी से है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं : विद्यालयों में संचालित ऐसी क्रियाएँ जो कक्षा, शिक्षण के अतिरिक्त संचालित होती है, जिसमें विद्यार्थी का शरीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास होता है।

सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन :– यहाँ सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन से तात्पर्य पर्यावरणीय जागरुकता हेतु संचालित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के परिणाम स्वरूप छात्रों में पर्यावरणीय जागरुकता की वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन से है।

4. शोध की आवश्यकता एवं महत्व

शोध कार्य की आवश्यकता शैक्षिक क्षेत्र में इसलिए है कि इससे यह पता चलता है कि हमारे शिक्षण कार्य में कहाँ कमी है और उस कमी को कैसे सुधारा जा सकता है। शोध कार्य की आवश्यकता किसी कार्य क्षेत्र में उपस्थित विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है।

5. उद्देश्य

शोध समस्याओं के समाधान की दिशा में शैक्षिक अनुसंधान के लिए कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। सम्बन्धित षोध कार्य हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य शोधार्थी द्वारा निर्धारित किये गये हैं–

1. इस अध्ययन से पर्यावरण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों का पता लग पायेगा तथा इन कठिनाइयों को दूर करने वाले उपायों से समाधान संभव हो सकेगा।
2. इस अध्ययन से छात्रों को अपने चारो ओर विद्यमान पर्यावरण की दशा, अवस्था तथा गुणवत्ता का संज्ञान हो सकेगा।

6. परिकल्पनाएँ

शोधार्थी शोध विषय पर अपने लिये कुछ प्रश्न करता है। उसके उत्तर वह स्वयं देता है। शोधार्थी के अनुसार उस समय प्राप्त ज्ञात तर्क, अनुभव आदि के आधार पर उन प्रश्नों के उत्तर हैं जिन्हें शोध के द्वारा तय करता है। तत्पश्चात् शोध में प्राप्त प्रदत्त सामग्री चिन्तन, तर्क, विधियों आदि की सहायता से वे उत्तर सही है कि नही इसका समाधान शोधार्थी ढूढ़ता है।

बेकन के अनुसार – "जैसे ही समस्या के अस्तित्व की खोज की जाती है, वैसे ही परिकल्पना का निर्माण हो जाना चाहिए।"

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए **लुण्डबर्ग[2]** के अनुसार ''परिकल्पना एक सम्भावित सामान्यीकरण होता है जिसकी सत्यता की जाँच अभी बाकी रहती है। अपनी अति प्रारम्भिक अवस्था में परिकल्पना एक आत्म प्रकाशन, अनुमान, कल्पनात्मक विचार, अन्तर्दृष्टि कुछ भी हो सकती है, जो अनुसंधान कार्य का आधार बन जाता है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. **शोध क्षेत्र के अध्ययनरत छात्र छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।**

7. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध का अध्ययन भौगोलिक रूप से रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड की राजस्व परिसीमा तक परिसीमित किया गया है। उक्त परिसीमन में संचालित शासकीय माध्यमिक विद्यालयों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य हेतु परिशुद्धता तथा यथार्थता के स्तरों को स्थापित करने के लिए न्यादर्श का विवरण निम्नानुसार हैः–

सारणी 1

क्र.	विद्यालय	विद्यालयों की संख्या	संस्था प्रमुखों की संख्या	शिक्षकों की संख्या	छात्रों की संख्या	अभिभावकों की संख्या
1.	माध्यमिक स्तर	10	10	20	100	30

8. शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है

8.1 सर्वेक्षणात्मक विधि :

अनुसंधान की वह पद्धति जिसके अन्तर्गत वर्तमान समय एवं स्थितियों में विद्यमान प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, सर्वेक्षण विधि कहलाती है। शैक्षणिक अनुसंधानों में इस विधि का प्रयोग किया गया है।

इस विधि में पूर्व निर्धारित प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अनुसूची द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त जानकारी या प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात् उनका वर्गीकरण सारणीयन प्रदत्तों से प्राप्त जानकारी की व्याख्या एवं मूल्यांकन किया जाता है।

8.2 अवलोकन विधि

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में दूसरी सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली विधि अवलोकन विधि है। यह विधि से संबंधित जानकारी प्राप्त करने की एक विश्वसनीय विधि है।

''कठोर शब्दों में प्रेक्षण में कानों तथा वाणी की अपेक्षा नेत्रों का प्रयोग अधिक होता है।'' – प्रो.सी.ए. मेजर

यह विधि सामूहिक व्यवहार का अध्ययन करने, निरक्षर तथा अन्य भाषा – भाषी लोगों का अध्ययन करने, प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष करने तथा

शोधकर्ता कार्य कारण संबंध का पता लगाकर उसका विश्लेषण करने के काम में आती है।

8.3 अभिलेख अध्ययन विधि

अभिलेख अध्ययन से तात्पर्य शोध समस्या के उन सभी अभिलेखों, पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों से है, जिनके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को बढ़ाने में सहायता प्राप्त होती है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न कार्यालयों, विद्यालयों से आकड़ें प्राप्त किये हैं।

9. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने न्यादर्श के वांछित आँकड़ों के चयन हेतु प्रश्नावली उपकरण को प्रयोग किया है।

10. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से बनर्जी, शुभंकर (1996)[1], पठवा शुभू, (1989)[2], गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अल्का (2007)[3], पाठक पी.डी. (2005–08)[4], माथुर, पी.सी. और रामकुमार गुर्जर (1992)[5] एवं खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987) ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना – 1 "शोध क्षेत्र के अध्ययनरत छात्र छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।"

सारणी क्रमांक 2 : शोध क्षेत्र के अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन

सं. क्र.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है			
			हाँ		नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
01	संस्थाप्रमुख	10	9	90.00	1	10.00
02	शिक्षक	20	14	70.00	6	30.00
03	छात्र	100	78	78.00	22	22.00
04	अभिभावक	30	19	63.33	11	36.67

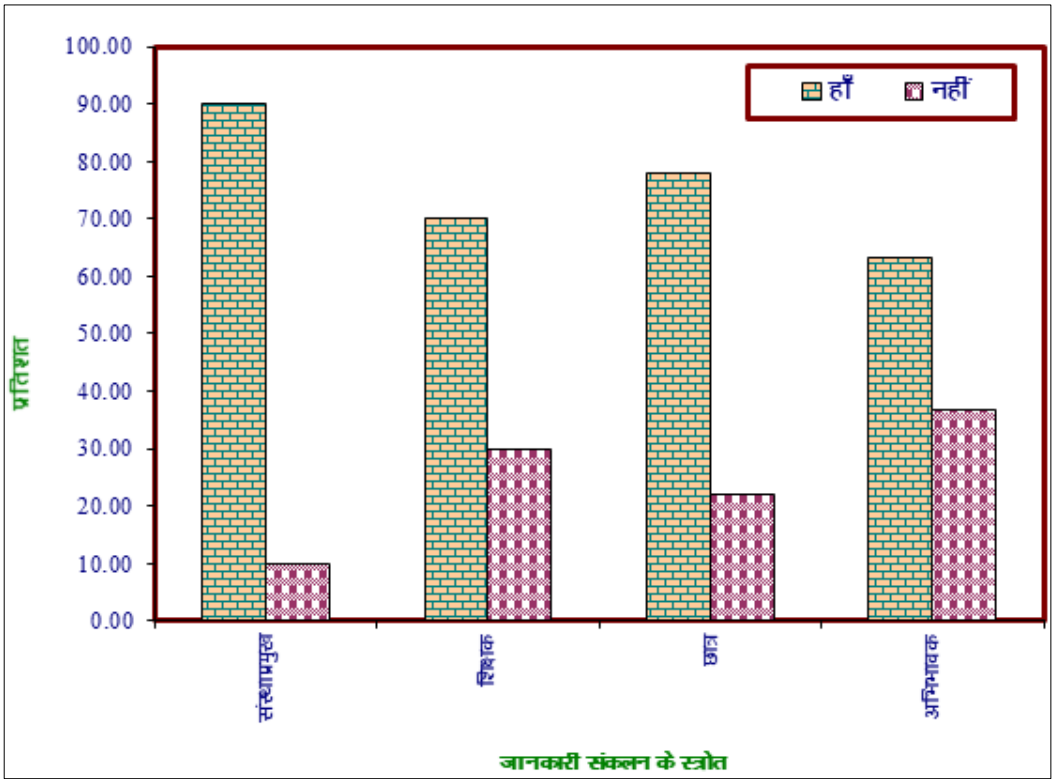

आकृति 1: शोध क्षेत्र के अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 2 से प्राप्त तथ्यों के आधार पर जानकारी संकलन के प्रबुद्ध स्त्रोत 90.00 प्रतिशत संस्थाप्रमुख, 70.00 प्रतिशत शिक्षक, 78.00 प्रतिशत छात्र एवं 63.00 प्रतिशत अभिभावक पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है से सहमत हैं। जबकि 10.00 प्रतिशत संस्थाप्रमुख, 30.0 प्रतिशत शिक्षक, 22.00 प्रतिशत छात्र, एवं 36.67 प्रतिशत अभिभावक असहमत हैं।

व्याख्या

उक्त सारणी क्र. 2 के विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य प्राप्त होता है कि पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अतः परिकल्पना क्रमांक – 1 पूर्ण रूपेण सत्यापित होती है।

12. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। पर्यावरण शिक्षा द्वारा बालक को स्वयं प्राकृतिक तथा जैविक वातावरण की समस्याओं को खोजनें में असमर्थ बनाया जाता है, एवं उसका समाधान स्वयं करता है, जिससें जीवन का विकास होता है। शिक्षा के विभिन्न आयामों, विधियों, प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। वास्तविक समस्या के कारण प्रभाव को पहिचानना एवं औपचारिक–अनौपचारिक शिक्षा द्वारा समस्याओं का समाधान करना जिससे मनुष्य में गुणवत्ता लायी जा सके। इस अध्ययन के द्वारा शोध कार्य में प्रयुक्त दो चरों के परिणामों की तुलना परिकल्पनायें बनाकर की गयी है और जो परिणाम आये हैं उनसे ज्ञात हुआ कि पर्यावरणीय जागरुकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

13. संदर्भ

1. बनर्जी, शुभंकर पर्यावरण की रक्षा के लिए जन आन्दोलन आवश्यक कुरूक्षेत्र, 1996, 14-17.
2. पठवा शुभू, पर्यावरण एवं संस्कृति, बीकानेर (भारत) : वाग्देवी प्रकाशन, 1989. पृष्ठ 124.
3. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवनए 2007.
4. पाठक पी. डी. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगराए 2005; 2(08):78-80.
5. माथुर, पी.सी. और रामकुमार गुर्जर., सम्पादक, पानी की खोज, जयपुर–(भारत) : पंचशील प्रकाशन, 1992, 288.
6. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, 44.